मालती जोशी के उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य विषयक मूल्य

मालिनी रस्तोगी
हिन्दी विभाग
शोध छात्रा
छत्रपति शाहू जी महाराज
विश्वविद्यालय, कानपुर

सारांश

मानव ने स्वयं को सामाजिक सुरक्षा देने हेतु पारिवारिक संस्था का गठन किया जिसका आधार दाम्पत्य जीवन होता है तथा दाम्पत्य जीवन का आधार दाम्पत्य संबन्ध होते हैं। समय के अनुसार दाम्पत्य जीवन विषयक मूल्यों में परिवर्तन आता रहा। उसी परिवर्तन का मालती जोशी ने अपने उपन्यासों में वर्णन किया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य मालती जोशी के उपन्यासों में वर्णित परम्परागत आधुनिक दाम्पत्य मूल्यों का तथा विघटित मूल्य एवं उससे प्रभावित दाम्पत्य जीवन मूल्यों का वर्णन करना है।

मुख्य शब्द : दाम्पत्य संबन्ध, परम्परागत मूल्य, आधुनिक मूल्य, विघटित मूल्य

प्रस्तावना

स्त्री पुरुष जब विभिन्न कारणों से एक साथ जीवन यापन का निश्चय करते हैं और उस सहवास सहमति को विभिन्न सामाजिक धार्मिक या न्यायिक अनुष्ठानों द्वारा दृढ़तर करते हैं, तब दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ होता है। दाम्पत्य जीवन के सुचारू निर्वहन के लिए (स्त्री–पुरुष) दम्पत्ति एक अतिरिक्त आचार संहिता का पालन करते हैं जिनसे दाम्पत्य जीवन संबन्धी मूल्यों का विकास होता है।

वस्तुतः विवाह या दाम्पत्य पारस्परिक जीवन का मूल केन्द्र है। पारम्परिक भाषा में इसे ग्रहस्थ जीवन या ग्रहस्थाश्रम भी कहते हैं। दाम्पत्य जीवन का स्वरूप अपने प्रारम्भ से अब तक पर्याप्त परिवर्तित हो गया है। मालती जोशी जी उस युग की कथाकार हैं जब समाज तथा परिवार में रिश्तों की गन्ध थी। इसलिए उनके उपन्यासों में परम्परागत दाम्पत्य जीवन का वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलता है। समय–समय पर समाज में होने वाले बदलाव को उन्होंने स्वीकारा है। उनके उपन्यास के पात्र विकृत मानव मूल्यों के शव से चिपटे पात्रों के साथ–साथ नवीन उद्भासित मूल्यों के साथ एक सम्मानित जीवन जीने के इच्छुक पात्र भी संघर्षशील दिखाई देते हैं। परम्परागत दाम्पत्य जीवन के साथ–साथ उनके उपन्यासों में आधुनिक दाम्पत्य जीवन विषयक मूल्य भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

मालती जोशी के उपन्यासों में दो पीढ़ियों का जिक्र मिलता है। प्रथम वह पीढी जो वयस्क बच्चों की माँ–बाप बन चुकी है, और दूसरी वह पीढी जो अभी युवा हो रही है, या जिसकी उम्र 30–35 वर्ष से अधिक नहीं है। इन दोनों पीढियों के दाम्पत्य संबन्धी मूल्यों में पर्याप्त अन्तर है। पहली पीढी प्रायः परम्परागत दाम्पत्य मूल्यों से संचालित है। इन मूल्यों से संचालित पत्नी पति को देवता के समान पूज्य मानती है वह पति के लिए स्वयं को समर्पित समझती है। पति के गुण, स्वभाव, कर्म आदि को आधार बनाकर पतिव्रत धर्म का पालन करती है। हजारों वर्षों से चले आ रहे ये जीवन मूल्य भी भारतीय परिवारों में विद्यमान है।

परम्परागत दाम्पत्य विषयक मूल्य

अधिकांश परिवारों की बुजुर्ग और प्रौढा महिलाएं इन्हीं मूल्यों से संचालित हैं। 'ऋणानुबन्ध' की नायिका निर्मला एक ऐसी परम्परागत दाम्पत्य मूल्य से संचालित महिला है जो अपने पति द्वारा मिसरानी की बेटी 'मंदा' से विवाहेतर संबंध बना लेने पर भी दाम्पत्य जीवन का उच्छेद नहीं करती और अपना गृहस्थ जीवन पूरी निष्ठा व तन्मयता के साथ व्यतीत करती है।

परम्परा दाम्पत्य मूल्यों के अन्तर्गत स्त्री सिर्फ विवाहेतर संबन्ध ही नहीं स्वीकारती है वह अपने पति के लिए अपने अस्तित्व को ही भूल पति सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देती है तथा उसके परिवार तथा सगे संबन्धियों को अपने से भी ज्यादा ध्यान रखती है। इस प्रकार के दाम्पत्य जीवन मूल्य का निदर्शन 'राग–विराग' की जिया के माध्यम से हुआ है। वह ससुराल व मायके के दूर–दराज' की रिश्तेदारी का अत्यन्त उत्साह से निर्वहन करती है। 'राग–विराग' की जिया के लिए कल्याणी कहती है– ''एक तरह से सारी दुनिया ही उनके भाई–भतीजों से भरी पडी है। कोई ससुराल पक्ष से, कोई पीहर पक्ष से तो कोई केवल माँ के नाते उनका सगा संबन्धी हो जाता था।''(1)

जिया परम्परागत विवाहिता नारी के रूप में मूकभाव से घर की सफाई, कमरों का लीपना–पोतना, पतिसेवा, वाद्ययंत्रों की सफाई उनके गिलाफ धोना आदि करती है। और कभी कोई शिकायत नहीं करती है क्योंकि वह इसे अपना कर्त्तव्य मानती है।

परम्परागत मूल्यों के अनुसार पत्नी पति की बेवजह झिडकी, डॉट–फटकार, गुस्सा शांत भाव से झेल जाती है उफ तक नहीं करती है। उपन्यास राग–विराग में भी पंडित जी कल्याणी के उन्हें बताए बिना बैंक की नौकरी करने से क्षुब्ध थे पर उन्होंने सारा गुस्सा जिया पर उतारना शुरु कर दिया और जिया भी अत्यन्त शान्त भाव से उस गुस्से को सह गई कुछ भी न कहा।

जिया अत्यन्त रूपवती स्त्री थी किन्तु उन्हें अपने रूप का जरा भी अभिमान न था। रूपवती होते हुए भी परम्परागत भारतीय विवाहिता नारी के समान घूँघट काढकर सादगी से रहती थी।

कल्याणी को पहली भेंट में सुरीले व्यक्ति की बेसुरी पत्नी लगने वाली जिया का वास्तविक रूप कुछ अलग ही था।

जिया को देखकर तो एकदम ही रीझ गई। किसी भी प्रसाधन की अपेक्षा न रखने वाला उनका दमकता रंग, वयस को झुठलाने वाली कांति, तीखे नाक–नष्क–ऐसा अनिंद्य रूप–रंग मैंने भी जीवन में पहली बार देखा था। वहाँ से लौटते हुए माँ बार–बार उसांस भर रही थी, ''भाग्य का खेल है सब। ऐसा रूप तो रजवाडों के यहां भी मुश्किल से दिखाई देता है और बेचारी इस पंडे–पुजारी बाबा के यहां झाड़ू बुहारी कर रही है[2]।''

पारम्परिक दाम्पत्य जीवन मूल्य केवल पुरानी पीढी की ही थाती नहीं है। वरन् नई पीढी भी भले ही प्रेम विवाह क्यों न करे। पारम्परिक दाम्पत्य मूल्यों यथा–पति सेवा, पति को प्रसन्न रखना, गृहकार्य करना खाना बनाना आदि में विश्वास रखती है। राग विराग की कल्यणी भी इन मूल्यों से संचालित दिखाई देती है।

''माँ के यहां तो कभी चाय भी मैंने अपने मन से नहीं बनाई। पर इन दिनों पति को नित्य नए व्यंजन, खिलाने का जुनून–सा सवार हो गया था। .... शाम को खाने में मैं पूरी शक्ति लगा देती। सहेलियों से रेडियो से पत्रिकाओं से नई–नई विधियाँ सीखकर उनका प्रयोग करती। पति की प्रशंसा पाने का सुख उन दिनों मेरा सबसे बडा प्राप्य था।[3]

भारतीय परम्परा से प्रभावित नारी केवल पति प्रेम पाकर ही संतुष्ट नहीं होती वरन् वह चाहती है कि उसकी ससुराल के सभी लोग प्रसन्न रहें। 'रागविराग' उपन्यास में मनोज की माँ जब बेटे से नाराज हो जाती हैं तब कल्याणी मनोज से उन्हें मनाकर लाने का आग्रह करती है। और एक आदर्श बहू होकर उनकी सेवा से उनका मन जीतने की बात कहती है।

''मेरे कारण वे अपने घर परिवार से कट जाएं, यह मुझे अच्छा नहीं लगा। ....उनका मान यदि तोडना है पहले हमें कुछ झुकना होगा। फिर देखना–कैसे चुटकी में सब काम होते हैं। क्योंकि मैं जानती हूँ, अपने बेटा बहू कोई हमेशा के लिए नहीं छोड देता।''[4]

आधुनिक दाम्पत्य मूल्य

''स्वातंयोत्तर भारतीय समाज में परम्परागत स्त्री – पुरुष संबन्धों की अवहेलना करके पति–पत्नी के संबन्धों की नवीन विचार–दृष्टि अपनायी जाने लगी है। स्त्री पुरुष संबन्ध निर्वाह में प्राचीन पाप पुण्य एवं नैतिकता अनैतिकता की बात तो शेष रही नहीं। इसलिए पति पत्नी के प्राचीन एकनिष्ठता मूलक मूल्यों में भी परिवर्तन हो रहा है। पति–पत्नी की खोज अब सामाजिक तथा आर्थिक संरक्षक की खोज नहीं है, बल्कि अपने मनोकूल साथी की खोज है।''[5]

व्यक्तिवादी विचारधारा के अनुसार जीवन साथी का अर्थ उसके जीते–जागते व्यक्तित्व से होता है। जो अपने साथी के समानान्तर ही जीवन जी सके, जो पूर्णतः उसके साथ तादात्म्य कर सके। इस प्रकार की नवीन विचारधारा के कारण पति अथवा पत्नी के रूप में जीवन की पूर्णता की माँग होने लगी है। स्वतंयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र हैं जिनकी विचार दृष्टि इसी ओर देखी जा सकती है।

आधुनिक युग में दाम्पत्य जीवन भी रूढिवादिता के घेरे से निकल कर प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर है। यही कारण है कि आधुनिक दम्पत्ति उन परम्परिक रीति–रिवाजों को नहीं मानता जो पहले दाम्पत्य जीवन की निरन्तरता के लिए आवश्यक मानी जाती थी।

''ज्वालामुखी के गर्भ में ''उपन्यास में हरि और सुलक्षणा ऐसे ही आधुनिक दम्पत्ति हैं। सुलक्षणा दाम्पत्य जीवन के स्थायित्व के लिए पारम्परिक भारतीय नारी द्वारा किये जाने वाले अनुष्ठान, व्रत, उपवास आदि पर विश्वास नहीं करती है। आधुनिक होने के कारण ही वह इस प्रकार की परम्पराओं का विरोध कर पाती है। वह हरतालिका का भी त्याग कर देती है और अपने मन का नाश्ता बनाकर खा लेती है। ननद द्वारा ताना देने पर कहती है नाश्ते की बात सोच रही हो न। वह तो एक एंटीडोज के रूप में ले रही हूँ। इस जन्म में जो सौभाग्यमिला है, उसे जन्मजन्मान्तर तक वहन करने की सामर्थ्य नहीं है मुझमें।''[6] आधुनिक समय में सात जन्म तक रिश्ता निभाने की बाद्धता नहीं रह गई है। आधुनिक दाम्पत्य मूल्य प्रेरित नारी दाम्पत्य जीवन में बराबर की सहभागिता चाहती है।

परिवार यदि अर्थ संकट से जूझ रहा है तो वह अर्थोपार्जन के क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर खडी होना जानती है। 'रागविराग' की कल्याणी इसी प्रकार की महिला है। वह द्वितीय संतान के जन्म से परिवार पर पडने वाले आर्थिक बोझ को उठाने के लिए बैंक की नौकरी जिसे छोडने का मन बना चुकी थी फिर से ज्वायन कर लेती है। पाषाण युग की शकुन भी एक ऐसी ही आधुनिका है जो दाम्पत्य जीवन तथा तत्संबन्धी मूल्यों को प्रगतिशील आधुनिक नजरिये से देखती है। वह किशोर से प्रेम करती है और उससे उसका विवाह होना भी तय है किन्तु आधुनिक विचारों की होने के नाते किशोर की पत्नी बनने के लिए बिकाऊ वस्तु बनना तथा दहेज देना उसे पसन्द नहीं है। इसलिए वह यह शादी तोड देती है। जब उसके पिता को शादी का कार्ड देखकर इस बात का पता चलता है और वह शकुन से कहते हैं कि इतनी सी बात के लिए तूने ....

.....? शकुन जवाब में कहती है कि ''बात छोटी थी, पर अपमानजनक थी। मुझसे सहन नहीं हुआ।'[7]

'सहचारिणी' उपन्यास की नायिका भी आधुनिक ख्यालत की है। वह तब तक दाम्पत्य जीवन सुरक्षित रखने का प्रयास करती है जब तक उसे लगता है दाम्पत्य जीवन के मूलाधार में प्रणय और समन्वय की गुंजाइश बची है। अपने पति की उसके अनैतिक कार्यों में सराहना नहीं करती है बल्कि उसका उचित मार्गदर्शन करती है उसकी यह बातें उसे अच्छी नहीं लगती है और इसी कारण वह दूसरी लडकी की तरफ आकर्षित हो जाता है। जब नीलम को इस विषय में पता चलता है तो वह उसे तोडने में एक क्षण भी नहीं लगाती है वह योगेश से कह देती है –''जिस दिन तुम्हें लगे कि तुम सीमा के बिना नहीं रह सकते, मुझे निःसंकोच कह देना, मैं एक क्षण का भी विलम्ब नहीं करूंगी, चुपचाप रास्ते से हट जाऊँगी।''[8]

आधुनिक दाम्पत्य मूल्य दम्पत्ति से दो हृदयों के शारीरिक मानसिकता दोनों स्तरों पर समन्वय की माँग करता है। परम्परागत दाम्पत्य मूल्यों पर निर्भर रहने के कारण दम्पत्ति में से एक स्त्री या पुरुष या कभी –कभी दोनों ही बेमन से दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करते चले जाते हैं किन्तु आधुनिक दाम्पत्य मूल्य के अन्तर्गत इस प्रकार का निर्वाह मान्य नहीं है। आधुनिक दाम्पत्य मूल्य में पग–पग पर स्त्री–पुरुष की हर इच्छा का सम्मान अति आवश्यक है। दोनों की सोच समझ आदि में समानता होना अति आवश्यक है।

निष्कासन में दम्पत्ति माया और डॉ0 कोहली दोनों ही पुनर्विवाहित हैं। माया नरेन्द्र के साथ दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर चुकी है तो डॉ0 कोहली का भी अमेरिका में प्रेम विवाह हुआ था। जिससे उनके दो बच्चे भी हैं। एक ओर जहां माया अपने अतीत में डूबी रहती है, वहीं डॉ0 कोहली अपना अतीत भूलकर नया जीवन जीते हैं। माया के अतीत में डूबे रहने के कारण एक दिन वह माया से पूछ बैठते हैं कि ''क्या यह शादी उस पर थोपी गयी है।''[9] वह माया को समझाते हैं कि विवाह का अर्थ सिर्फ शारीरिक तुष्टि नहीं बल्कि मानसिक तुष्टि है।

''शादी का मकसद सिर्फ शारीरिक तुष्टि नहीं उसका इंतजाम तो चाँदी के कुछ टुकडों में कहीं भी हो सकता है। इंसान जब शादी करता है, तो जरूर इससे कुछ ज्यादा चाहता है।''[10]

आधुनिक दम्पत्ति अपने अतीत को भूलकर वर्तमान में जीना चाहते हैं और अपने जीवन साथी को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह मूल्य दृष्टि भारत में पश्चिम से आयातित है इसे स्वीकारकरती हुयी मालती जी निष्कासन उपन्यास की माया के माध्यम से कहती हैं–

''पश्चिम के जहा लोग सिर्फ वर्तमान को जीते हैं, उसे पूरी इच्छा शक्ति के साथ भोगते हैं। तभी तो इतना खुलकर हँस पाते हैं। ....जो बीत गया, उसके लिए कोई कसक नहीं, मलाल नहीं। अतीत के लिए बिसूरना तो हमारे हिस्से में आया है।''[11]

इस प्रकार हम देखते हैं कि मालती जी ने अपने उपन्यासों में दाम्पत्य विषयक मूल्यों में परम्परागत मूल्यों का जितना सुन्दर चित्रण किया है उतना ही सटीक तथा शसक्त चित्रण दाम्पत्य विषयक आधुनिक मूल्यों का भी किया है उन्होंने जहाँ एक ओर भारतीय नारी का पारम्परिक रूप प्रस्तुत किया है तो दूसरी ओर आज के संदर्भ में आवश्यक बदलाव के साथ नारी के आधुनिक रूप का चित्रण किया है, जिसमें वह पति को परमेश्वर न मानकर जीवन साथी मानती है तथा पति भी पत्नी को दासी या भोग की वस्तु न मानकर कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाला साथी मानता है। दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पण का भाव नहीं बल्कि सम्मान का भाव रखते हैं।

विघटित मूल्य तथा प्रभावित दाम्पत्य संबन्ध

जो दाम्पत्य जीवन सम्पूर्ण परिवार समाज व राष्ट्र का मूलाधार माना जाता था, अब विभिन्न कारणों से विघटित होने लगा है। प्रणय और काम की स्वच्छन्दता, नारी शिक्षा, नारी जागरण व नारी सशक्तिकरण की प्रक्रिया, नारी स्वातंय और पारिवारिक व सामाजिक जीवन में बराबरी व सहभागिता के साथ समान अधिकारों की मांग के कारण आज दाम्पत्य जीवन विघटित मूल्यों की त्रासदी झेलने को विवश है। दाम्पत्य जीवन में कलह, स्वैरता, के कारण पूरा पारिवारिक ढाँचा चरमरा उठा है। पति पत्नी में अविश्वास, विश्वासघात, स्पर्धा आदि के कारण जब वैवाहिक जीवन असुरक्षित हो जाता है तो परिवार भी उसके दुश्परिणाम भोगता है। बच्चे, माँ–बाप, सास–ससुर, भाई–बहिन, देवर–जेठ, सभी संबन्ध प्रश्नांकित और प्रताड़ित होने लगते हैं। मालती जोशी ने बिखरे हुए दाम्पत्य, बेमेल विवाह, पति–पत्नी के बीच किसी तीसरे की उपस्थिति, नारी स्वतंत्रता और महत्वकांक्षा का परिवार पर प्रभाव, अनैतिक संबन्ध, असमान जीवन स्तर का दाम्पत्य और पारिवारिक जीवन पर प्रभाव का आकलन अपने विभिन्न उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

बेमेल विवाह के कारण दाम्पत्य जीवन में आए बिखराव की समस्या को श्रीमती मालती जोशी जी ने अपने शोभायात्रा, पाषाण–युग, ज्वालामुखी के गर्भ में आदि उपन्यासों में उकेरा है।

शोभायात्रा की कथा–नायिका वंदना अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट है। वंदना तथा उसके पति मनोज के जीवन स्तर में किसी भी प्रकार का सामंजस्य नहीं है। वंदना अंग्रेजी साहित्य की उच्च शिक्षिता अध्येता सुसंस्कृत एवं संवेदनशील युवती है। किन्तु वह मनोज जैसे औकात शून्य शराबी, व्यभिचारी, खूनी एवं पाखण्डी व्यक्ति, के साथ ब्याही जाती है। इस प्रकार पति–पत्नी के जीवन स्तर में स्थिति विसंगति वेदना दाम्पत्य जीवन में विखराव की जड़ बन जाती है। इस बिखराव की स्थिति को लेखिका ने वन्दना के निम्नलिखित स्वागत से द्योतित किया है– ''ऐसे संस्कार शून्य व्यक्ति के साथ कोई भावुक मन कैसे जुड़ा रह सकता है।''[12]

पति–पत्नी की रूचि मित्रता के कारण भी दाम्पत्य संबन्धों में दरार पड़ती है। 'पाषाण युग'; उपन्यास में संभवतः उम्र का अंतराल रूचि–मित्रता का एक कारण माना जा सकता है। प्रतिपाद्य उपन्यास के विधुर प्रोफेसर साहब का दूसरा विवाह उन्हीं की शोध छात्रा नीरजा से हो जाता है, जो अपने पति से उम्र में सोलह साल छोटी है। विवाह के पश्चात नीरजा का अपने सहपाठियों से मिलना जुलना तथा उसका साजश्रृंगार उसके पति को कतई पसंद नहीं। अतः

ऐसे दमघोटू परिवेश में स्वास–प्रश्वास लेना भी नीरजा के लिए मुश्किल हो जाता है।

उपन्यास 'ज्वालामुखी के गर्भ में' सुलक्षणा अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट है। उसका यह कथन इस तथ्य की पुष्टि करता है।'' विवाह के रूप में उसने जिस पुरुष का वरण किया था, वह मात्र एक ऐसा रबड का बबुआ है जिसके पास न अपनी कोई संवेदना है, न आस्थाएँ, न आकांक्षाएँ। वह न ढंग से प्रेम कर सकता, न घृणा। इस तरह शून्य में कितने दिन जिया जा सकता है।''[13]

सुलक्षणा के इस वक्तव्य में दाम्पत्य विघटन की आहट अवश्य पायी जा सकती है। इस प्रकार लेखिका ने दाम्पत्य जीवन में आने वाले बिखराव के पार्श्व में अवस्थित कतिपय कारणों की मीमांसा की है।

दाम्पत्य जीवन में आने वाले बिखराव का एक कारण होता है उनके दाम्पत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति का अनाधिकार प्रवेश। यह तीसरा व्यक्ति कभी पुरुष होता है तो कभी स्त्री।

दाम्पत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति के आगमन के परिणामस्वरूप मालती जोशी कृत पटाक्षेप, सहमे हुए प्रश्न, ज्वालामुखी के गर्भ में, सहसा नया मोड धारण करते हैं और तीनों उपन्यास में चित्रित सुखी दाम्पत्य जीवन में ठहराव सा आ जाता है।

'सहमें हुए प्रश्न' उपन्यास में दो बिखरते दाम्पत्य जीवन की कथा है शोभा और उसका पति तथा अंजू और चेतन इन दोनों दम्पतियों के बीच तीसरे व्यक्ति का अनापेक्षित प्रवेश उनमें मनसिक तनाव व घुटन पैदा करता है। दाम्पत्य जीवन के भरे–पूरे बीस साल बिताने के बावजूद शोभा का पति स्वयं को रीता व अकेला पाता है जिसके कारण शोभा अपने पति के मन की थाह नहीं ले पाती। नाती–पोते वाली उम्र में प्रविष्ट होने के बावजूद शोभा का पति अपने ही साले की पत्नी की ओर आकृष्ट होता है, दूसरी ओर चेतन को अपनी गृहस्थी में जीजाजी की अतिरिक्त दिलचस्पी विचलित कर देती है। अतः अनायास रूप से चेतन और अंजू के दाम्पत्य जीवन में मनमुटाव एवं दुराव आ जाता है। अपनी बहन से वह कह उठता है ''मेरा घर, मेरी नौकरी, यहाँ तक कि मेरी बीवी भी लगता है, जिंदगी की सारी नेमतें उन्हीं की दी हुयी हैं और इसलिए सबसे वितृष्णा सी हो गई है।''[14]

नारी की निजी स्वतंत्रता अस्तित्व की गरिमा की आहट मालती जोशी के निश्कासन, शोभायात्रा, ज्वालामुखी के गर्भ में, पाषाणयुग आदि उपन्यासों में सुनाई पड़ती है। 'पाषाण युग'' की नीरजा अपने पति के शोध सामग्री–संकलन तथा लेखन में नित्यप्रति हाथ बंटाते रहने के कारण उसका अपना शोधकार्य ठप्प हो जाता है, बल्कि एक प्रकार से उसका साहित्यिक व्यक्तित्व ही कुंठित हो जाता है। अतः अपने सार्जक व्यक्तित्व पर आँच आती देखकर वह अपने पति से दो टूक जवाब तलब करती है–''आप चाहते हैं कि बस मैं आपकी सेक्रेटरी बनी रहूँ। आपके पत्रों, पुस्तकों, धोबी दूधवाले का हिसाब रखती फिरूँ ....। लेकिन मैं आम औरतों की तरह नहीं हूँ। इसलिए लीक से हटकर चली हूँ।''[15]

इस प्रकार स्त्री शिक्षा के फलस्वरूप समाज में जागरण तथा अस्मिता की लहर अवश्य दौड पडी है किन्तु इसके साथ ही परिवारिक बिखराव का खतरा भी दम्पत्ति को मोल लेना पडता है। पैसा एवं पद की अहंमन्यता तथा महत्वाकांक्षा से प्रभावित दाम्पत्य जीवन की झलक श्रीमती जोशी के 'मन न भए दस बीस', शोभायात्रा, पाषाण युग आदि उपन्यासों में दृष्टिगत होते हैं। स्त्री पुरुष का विवाह–बाह्य एवं विवाह पूर्व परस्पर आकर्षण तथा अवैध संबन्ध उनके दाम्पत्य जीवन में दरार पैदा कर सकता है। विवाह–बाह्य एवं नीति–बाह्य संबन्धों की समस्या मालती जी के ऋणानुबन्ध, पुनरागमनाय च, पटाक्षेप, परिणय, ज्वालामुखी के गर्भ में, शोभायात्रा आदि उपन्यासों में उभरकर आयी है। जैसे–ऋणानुबन्ध की मंदा, पुनरागमनाय च की निधि, ज्वालामुखी के गर्भ में हरीश की माँ आदि नारी पात्रों को विवाह पूर्व आकर्षण के दुष्परिणामों को आजीवन भुगतना पडता है।

इसी प्रकार शोभायात्रा का मनोज, ऋणानुबन्ध में प्रतिमा के पिता ज्वालामुखी के गर्भ में नमिता के पिता के मन में परायी स्त्री के प्रति आकर्षण उद्दीप्त होता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपने दाम्पत्य जीवन में ब्रेक पॉइंट' का खतरा मोल लेना पडता है।

दाम्पत्य जीवन में पति–पत्नी की जीवन विषयक स्तर दृष्टि में भी यदि असमानता नहीं होती तो वह भी विघटन का कारण बनती है। 'सहचारिणी' उपन्यास की नायिका नीलू तथा उनके पति–योगेश के दाम्पत्य जीवन में उनकी जीवन विशयक स्तर भिन्नता तथा दृष्टि–भिन्नता दोनों में केवल तनाव ही नहीं प्रत्युत अलगाव पैदा करती है। ''शेष सभी मोर्चों पर हम बार–बार टकरा चुके थे और यह तथ्य उभरकर सामने आ चुका था कि हम दोनों में कहीं कोई सामंजस्य नहीं हैं।''[16]

जीवन मूल्य विषयक उक्त भिन्नता के कारण प्रतिपाद्य दाम्पत्य जीवन के बीच सारे संवाद निःशेष हो जाते हैं तब उनके लिए दाम्पत्य जीवन भयावह हो जाता है। अतः केवल शारीरिक स्तर पर पति के साथ जुड़े रहना नीलू को अपमान जनक प्रतीत होता है। इस प्रकार पति–पत्नी के जीवन स्तर की आसमनता उनके दाम्पत्य जीवन में टूटन पैदा करती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लेखिका ने अपने उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन का विस्तृत तथा गहराई से वर्णन किया है। इस संबन्ध की मिठास तथा खटास दोनों का तथा उसके कारणों का यथार्थ वर्णन किया है। उनके उपन्यासों में जहाँ एक ओर पारम्परिक दाम्पत्य जीवन विषय मूल्यों में एक निष्ठता, पतिसेवा, पति के प्रति समर्पण का भाव, ससुराल के प्रति समर्पण, परिवार को साथ लेकर चलने का भाव, त्याग, धार्मिक अनुष्ठान तथा रूढियों का पालन आदि देखने को मिलते हैं। वहीं दूसरी तरफ आधुनिक दाम्पत्य विषयक मूल्यों के अन्तर्गत रूढियों का उच्छेद, वर्तमान में जीना परिवार तथा जीवन में बराबरी की सहभागिता, आत्मसम्मान आदि मूल्य देखने को मिलते हैं। इन दोनों प्रकार के मूल्यों साथ–साथ आज के प्रगतिशील युग में नारी जागरण सशक्तिकरण आदि के फलस्वरूप जो विघटन हो रहा है उसका भी यथार्थ वर्णन मालती जी के उपन्यासों में देखने को मिलता है। दाम्पत्य विषयक विघटित मूल्यों के अन्तर्गत मालती जी ने बेमेल विवाह, दाम्पत्य के बीच तीसरे व्यक्ति की अपनेक्षित अवस्थिति, विवाह बाह्य अवैध संबंध,

नारी के अपने स्वत्य का अहसास, उसकी असीम महत्वकांक्षा आदि मूल्यों का वर्णन किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. रागविराग मालती जोशी पृष्ठ सं0 6
2. रागविराग '' 76
3. रागविराग '' 84
4. रागविराग '' 86
5. हिन्दी उपन्यासों में जीवन मूल्य डॉ0 मोहनी शर्मा 121—122
6. ज्वालामुखी के गर्भ में मालती जोशी 31
7. पाषाण युग '' 60
8. पाषाण युग '' 72
9. निष्कासन '' 79
10. निष्कासन '' 79
11. शोभायात्रा '' 15
12. ज्वालामुखी के गर्भ में '' 55
13. सहमे हुए प्रष्न '' 28
14. पाषाण युग '' 28
15. सहचारिणी '' 55
16. सहचारिणी ''